%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D. )

%%p. 015

No. 007

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 1193; A. R. No. 365-XXVI of 1899 )

Ś. 1125<2>

(१।) वनिशशिगणिते माकरे संक्रमेस्ति [।] वारे

काव्यस्य प[क्षे]

(२।) ...... पित्रो[श्शु]भार्त्थ हरिगिरिशिखरा स्थाइने

धर्म्मकोसौ प्रा-

(३।) .... .... स्वस्तिश्री [।।] शकवर्षवुलु ११२५ [गुने]-

(४।) .... .... यणसक्रांत्तियु शुक्रवारमुन श्रीजीह-

(५।) .... .... वरकु वुद्धिश्वररावतु कोड्कु संध्युमहाम‒

(६।) ... ... रोग्यैश्वर्याभिव्रिद्धियं

(७।) ...... दिव्यसन्निधियंदु अखण्डदीप-

(८।) ...... ई मोदाल फलमुनंदु श्रीनर-

(९।) ...... क्क नाचंद्राक्कमु चेल्लंगलयदि

(१०।) ...... गगकऋत वेइ कइलल वधि-

(११।) ...... परदत्तां वा यो हरेति वसु-

(१२।) ...... यां जायते क्रिमि [।।]<3>

<1. On the north wall (outside) of the Asthānamaṇḍapa of this temple.>

<2. The corresponding date is the 26th December, 1203 A. D., Friday.>

<3. On a stone close to this inscription is engraved the following two lines in the same characters :‒

(1) सुधीरथो द्विजेंद्रतिलक श्रीरंगनारायण

(2) मानाम्ना परेण च्च योयंक्वारइ......>